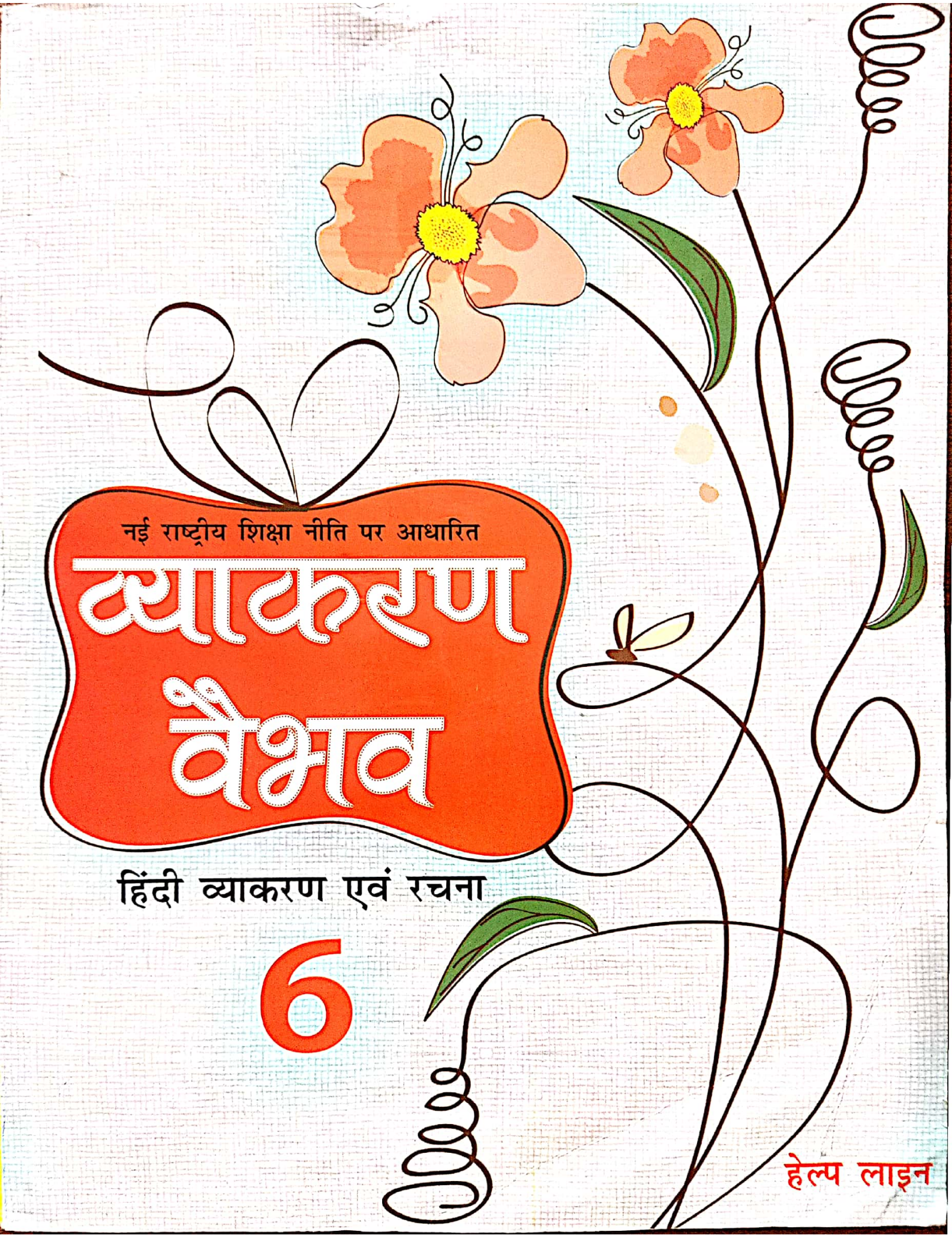

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित

व्याकरण वैभव

हिंदी व्याकरण एवं रचना

6

हेल्प लाइन

Scanned with CamScanner

1 भाषा, लिपि और व्याकरण

Language, Script and Grammar

भाषा

संसार का प्रत्येक प्राणी अपने भावों और विचारों को प्रकट करने के लिए ध्वनियों का प्रयोग करता है। पशु-पक्षी प्रेम एवं क्रोध का प्रदर्शन अलग-अलग आवाज़ों से करते हैं। उनके पास भाषा नहीं होती। मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है, जिसके पास बोलकर या लिखकर भावों एवं विचारों को प्रकट करने के लिए भाषा रूपी साधन है।

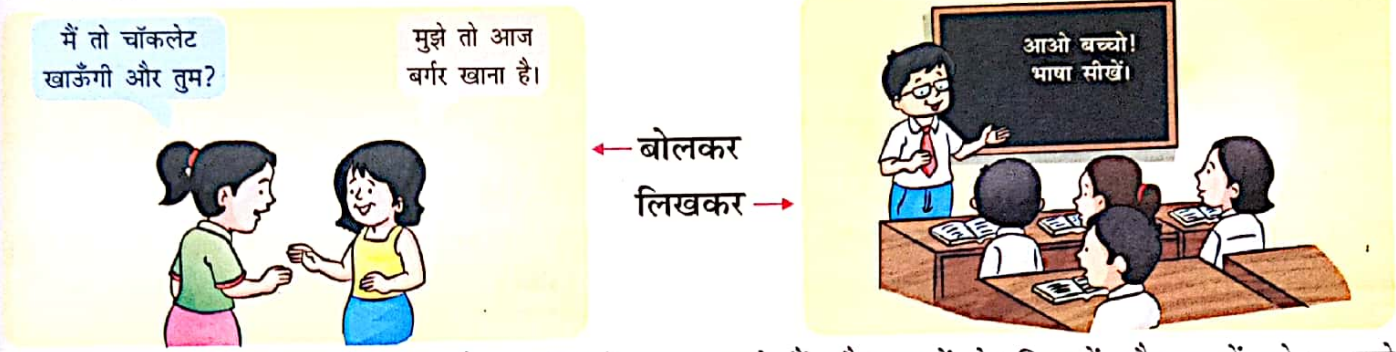

भाषा के द्वारा हम अपने विचारों और भावों को प्रकट करते हैं और दूसरों के विचारों और भावों को समझते हैं।

भाषा शब्द संस्कृत की '**भाष्**' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है– **बोलना**। अत:

भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम बोलकर या लिखकर अपने विचार दूसरों के सामने प्रकट करते हैं तथा दूसरों के विचार सुनकर या पढ़कर ग्रहण करते हैं।

भाषा के रूप–

भाषा के दो रूप होते हैं– 1. मौखिक 2. लिखित

1. मौखिक भाषा

जब अपने मन के विचार बोलकर प्रकट किए जाते हैं और सुनकर समझे जाते हैं, तो भाषा का यह रूप 'मौखिक भाषा' कहलाता है।

◎ टी॰ वी॰ पर कॉमेडियन कपिल शर्मा कोई चुटकुला बोलकर सुनाता है, हम उस चुटकुले को सुनकर समझते हैं और खिलखिला पड़ते हैं।

◎ एक बालिका अपनी सखी को फ़ोन करके नववर्ष की शुभकामनाएँ देती है।

Scanned with CamScanner

2. लिखित भाषा

जब मन के भाव और विचार लिखकर प्रकट किए जाते हैं, और दूसरे उन्हें पढ़कर समझते हैं, तो भाषा का यह रूप 'लिखित भाषा' कहलाता है।

ⓒ शिखर मोबाइल फ़ोन पर मैसेज लिखकर अपने मित्र रोहन को जन्मदिन की शुभकामनाएँ भेज रहा है। जब रोहन को मैसेज प्राप्त होगा तो वह पढ़कर समझ जाएगा कि उसे शिखर ने जन्मदिन पर शुभकामनाएँ भेजी हैं।

भाषा के अंग

भाषा द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति के लिए ध्वनि, वर्ण, शब्द, वाक्य और लिपि की आवश्यकता होती है। ये सभी भाषा के अंग हैं।

बोली

भाषा के स्थानीय या क्षेत्रीय रूप को 'बोली' कहते हैं। भाषा और बोली में अंतर केवल इतना है कि बोली भाषा का क्षेत्रीय रूप है, जिसका प्रयोग एक क्षेत्र में ही किया जाता है; जैसे– गढ़वाली, एक बोली है, जो गढ़वाल क्षेत्र में ही बोली जाती है। हिंदी की प्रमुख बोलियाँ हैं– ब्रज, अवधी, भोजपुरी, हरियाणवी आदि। जब किसी बोली में साहित्य रचा जाने लगता है तो वह भाषा का रूप धारण कर लेती है और उसे भाषाओं की श्रेणी में रखा जाने लगता है; जैसे– ब्रज, भोजपुरी, मैथिली आदि।

लिपि

प्रत्येक भाषा को एक ही ढंग से नहीं लिखा जा सकता। हर भाषा को लिखने का ढंग अलग होता है, उसके वर्णों की बनावट भिन्न होती है। इन वर्णों के लिखने के ढंग को ही 'लिपि' कहा जाता है।

भाषा की ध्वनियों को लिखने का ढंग **लिपि** कहलाता है।

विभिन्न भाषाओं की लिपियाँ

1. संस्कृत, हिंदी, नेपाली – **देवनागरी** लिपि में लिखी जाती हैं।
2. अंग्रेज़ी – **रोमन** लिपि में लिखी जाती है।
3. उर्दू – **फ़ारसी** लिपि में लिखी जाती है।
4. पंजाबी – **गुरुमुखी** लिपि में लिखी जाती है।

मातृभाषा

'मातृभाषा' शब्द का शाब्दिक अर्थ है– 'मातृ (माता) की भाषा'। व्याकरण में मातृभाषा उस भाषा को कहा जाता है, जिसे बच्चा शैशवावस्था में सबसे पहले अपनी माँ से सीखता है।

ⓒ यह मनोज है। इसके माता-पिता कोलकाता में रहते हैं। वे बांगला बोलते हैं। मनोज भी धीरे-धीरे बांगला बोलना सीख रहा है।

आपने देखा, बच्चा जिस परिवार में रहता है, पलता है, बड़ा होता है उस

Scanned with CamScanner

परिवार के लोग माता-पिता, भाई-बहिन आदि बातचीत करते समय जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, बच्चा सबसे पहले उसी भाषा को सीखता है। यही भाषा उसकी 'मातृभाषा' कहलाती है।

भारत की राजभाषा

भारत के अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। जैसे बंगाल में बांगला, गुजरात में गुजराती, राजस्थान में राजस्थानी आदि।

भारत की भाषाओं में 'हिंदी' ही एकमात्र ऐसी भाषा है, जिसका प्रयोग किसी-न-किसी रूप में संपूर्ण भारत में किया जाता है इसीलिए हिंदी को भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को **'स्वतंत्र भारत की राजभाषा'** घोषित किया।

14 सितंबर का दिन पूरे भारत में **हिंदी दिवस** के रूप में मनाया जाता है।

व्याकरण

प्रत्येक भाषा के कुछ नियम होते हैं। जो शास्त्र इन नियमों की जानकारी देता है, उसे व्याकरण कहते हैं। इन्हीं नियमों के आधार पर हम भाषा के शुद्ध तथा अशुद्ध रूप को निर्धारित करते हैं।

व्याकरण वह शास्त्र है जो हमें भाषा को शुद्ध बोलना, लिखना और पढ़ना सिखाता है।

व्याकरण के तीन अंग या विभाग होते हैं–

1. **वर्ण-विचार** : व्याकरण के इस विभाग में वर्णों के स्वरूप, भेद, प्रकार आदि पर विचार किया जाता है।
2. **शब्द-विचार** : व्याकरण के इस विभाग में शब्दों एवं उनके भेद, लिंग, वचन आदि पर विचार किया जाता है।
3. **वाक्य-विचार** : व्याकरण के इस विभाग में वाक्य-रचना, वाक्य-भेद, वाक्य-विश्लेषण, विराम-चिह्न आदि के बारे में विचार किया जाता है।

इन सबके बारे में आप आगे के अध्यायों में पढ़ेंगे।

हमने जाना

1. भाषा के द्वारा हम अपने विचारों और भावों को प्रकट करते हैं और दूसरों के विचारों और भावों को समझते हैं।
2. भाषा के दो रूप होते हैं– (क) मौखिक भाषा (ख) लिखित भाषा
3. भाषा के स्थानीय या क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं।
4. वर्णों या अक्षरों को लिखने के ढंग को लिपि कहा जाता है।
5. वह शास्त्र जो भाषा के शुद्ध स्वरूप तथा शुद्ध प्रयोग का ज्ञान कराता है, व्याकरण कहलाता है।
6. व्याकरण के तीन अंग हैं– (क) वर्ण-विचार (ख) शब्द-विचार (ग) वाक्य-विचार

Scanned with CamScanner

अभ्यास

मौखिक प्रश्न

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) भाषा के कितने रूप होते हैं?

(ख) मौखिक भाषा किसे कहते हैं?

(ग) लिखित भाषा किसे कहते हैं?

(घ) हिंदी दिवस कब मनाया जाता है?

लिखित प्रश्न

1. नीचे दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए– बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) बच्चा सबसे पहले सीखता है–

लिखित भाषा ○ मौखिक भाषा ○ सांकेतिक भाषा ○ मातृभाषा ○

(ख) पंजाबी भाषा की लिपि है–

देवनागरी ○ रोमन ○ गुरुमुखी ○ फ़ारसी ○

(ग) इनमें से कौन-सी लिपि दाईं ओर से बाईं ओर को लिखी जाती है।

देवनागरी ○ रोमन ○ गुरुमुखी ○ फ़ारसी ○

(घ) हिंदी दिवस मनाया जाता है–

2 अक्टूबर को ○ 5 सितंबर को ○ 14 सितंबर को ○ 26 जनवरी को ○

(ङ) इनमें से किस भाषा की लिपि देवनागरी नहीं है–

हिंदी ○ संस्कृत ○ अंग्रेज़ी ○ नेपाली ○

(च) व्याकरण के कितने विभाग होते हैं?

दो ○ तीन ○ चार ○ पाँच ○

(छ) तमिलनाडु में बोली जाती है–

कन्नड़ ○ अंग्रेज़ी ○ तेलुगु ○ तमिल ○

2. इन कथनों में से सही के सामने (✓) तथा गलत के सामने (×) का चिह्न लगाइए–

(क) भाषा का मौखिक रूप स्थायी होता है। ○

(ख) व्याकरण से विचारों का आदान-प्रदान होता है। ○

(ग) लिपि भाषा का क्षेत्रीय रूप है। ○

(घ) हिंदी भारत की मातृभाषा है। ○

(ङ) संस्कृत भाषा की लिपि देवनागरी है। ○

3. नीचे दिए गए शब्दों में से मौखिक और लिखित भाषा के रूप छाँटकर सही शीर्षक के नीचे लिखिए–

निबंध	कविता-पाठ	कहानी	वाद-विवाद	भाषण
वार्तालाप	नाटक	प्रार्थना-पत्र	प्रार्थना-गायन	

मौखिक _____

लिखित _____

Scanned with CamScanner

4. निम्नलिखित भाषाओं की लिपियों के नाम लिखिए–

हिंदी _____ अंग्रेज़ी _____

पंजाबी _____ उर्दू _____

5. भाषा किसे कहते हैं?

6. लिपि किसे कहते हैं?

7. भाषा के कितने रूप होते हैं? प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।

8. व्याकरण से आप क्या समझते हैं? व्याकरण का ज्ञान क्यों आवश्यक है?

रचनात्मक क्रियाकलाप

1. नीचे दिए गए वर्ग में से भारत में बोली जाने वाली दस भाषाएँ खोजकर रिक्त स्थानों में लिखिए–

म	उ	र्दू	त	मि	ल
ञ	रा	हिं	दी	छ	च
ते	लु	गु	क	न्न	ड़
पं	जा	बी	बां	ग	ला
अ	स	मि	या	व	र
अं	ग्रे	ज़ी	उ	ड़ि	या

1. _____ 6. _____

2. _____ 7. _____

3. _____ 8. _____

4. _____ 9. _____

5. _____ 10. _____

2. भारत के किन्हीं चार राज्यों के नाम तथा वहाँ बोली जाने वाली मुख्य भाषाओं के नाम लिखिए–

क्रम	राज्य का नाम	बोली जाने वाली भाषा
1.		
2.		
3.		
4.		

आओ सीखें खेल-खेल में–

भारत के संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। अपने 4-5 साथियों का समूह बनाइए। संविधान में मान्यता प्राप्त प्रत्येक भाषा का नाम रंग-बिरंगी कार्ड शीट से काटी गई फूल की पंखुड़ियों पर स्केच पेन से लिखिए। फिर सभी पंखुड़ियों को एक टोकरी में मिला लीजिए। समूह का प्रत्येक सदस्य टोकरी से एक पंखुड़ी निकालेगा और पंखुड़ी पर लिखी भाषा के राज्य का नाम बताएगा। सबसे ज़्यादा सही उत्तर देने वाला 'तेज़-तर्रार', उससे कम सही उत्तर देने वाला 'तेज़' और तीसरे नंबर पर आने वाला 'स्लो' कहलाएगा। बाकी सब 'फिसड्डी' होंगे।

Scanned with CamScanner

2 वर्ण-विचार और उच्चारण

Orthography and Pronunciation

वर्ण क्या है?

किसी भी भाषा को सीखने के लिए सबसे पहले हमें उस भाषा के मूल ध्वनि-समूह को सीखना पड़ता है। मूल ध्वनि-समूह को आमतौर पर अक्षर (alphabet) भी कहते हैं। किसी भाषा के अक्षरों को सीखे बिना उस भाषा का ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता।

भाषा के ये ध्वनि-समूह या अक्षर ही 'वर्ण' कहलाते हैं।

> वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके खंड न हो सकें, **वर्ण** कहलाती है। वर्ण ध्वनि की सबसे छोटी इकाई होती है। इसे **'अक्षर'** भी कहते हैं।

नीचे दिए गए चित्रों को देखकर उनके नाम का उच्चारण कीजिए–

कमल

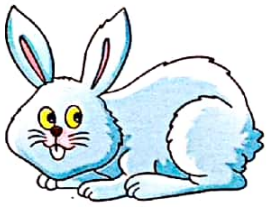

खरगोश

विद्यालय

उपर्युक्त चित्रों के नामों का उच्चारण करने पर निम्नलिखित ध्वनियाँ निकलती हैं–

कमल : क् + अ + म् + अ + ल् + अ

खरगोश : ख् + अ + र् + अ + ग् + ओ + श् + अ

विद्यालय : व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ

कमल, खरगोश, विद्यालय शब्दों की उपर्युक्त ध्वनियों के और अधिक खंड नहीं किए जा सकते। यही ध्वनियाँ व्याकरण में **वर्ण** या **अक्षर** कहलाती हैं। यह भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है।

वर्णमाला

हिंदी भाषा की वर्णमाला में निम्नलिखित वर्ण होते हैं–

स्वर : अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ = **11 स्वर**

अयोगवाह : **अनुस्वार** : अं (ं) **विसर्ग** : अः (:) **अनुनासिक** : अँ (ँ)

Scanned with CamScanner

व्यंजन

कवर्ग : क् ख् ग् घ् ङ्

चवर्ग : च् छ् ज् झ् ञ्

टवर्ग : ट् ठ् ड् ढ् ण्

तवर्ग : त् थ् द् ध् न्

पवर्ग : प् फ् ब् भ् म्

अंतस्थ : य् र् ल् व्

ऊष्म : श् ष् स् ह्

अन्य वर्ण : ड़ ढ़

आगत वर्ण : अंग्रेज़ी और उर्दू-फ़ारसी भाषा की ध्वनियाँ। ऑ ज़ फ़

संयुक्त व्यंजन : ये चार वर्ण संयुक्त व्यंजन हैं। क्ष त्र ज्ञ श्र

क्ष : क् + ष

त्र : त् + र

ज्ञ : ज् + ञ

श्र : श् + र

इन वर्णों में दो-दो व्यंजन मिले हुए हैं।

वर्णों के भेद

उच्चारण और प्रयोग के आधार पर वर्णों को दो भागों में बाँटा जा सकता है–

स्वर तथा व्यंजन।

स्वर : जिन वर्णों के उच्चारण में किसी तरह की रुकावट नहीं होती और जिनका उच्चारण बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता से किया जाता है, उन वर्णों को **स्वर** कहते हैं।

हिंदी भाषा में ग्यारह स्वर हैं–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वर के भेद

स्वर के तीन भेद हैं–

1. **ह्रस्व स्वर :** जिन स्वरों के उच्चारण में **एक मात्रा का समय** लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इन्हें **मूल स्वर** भी कहते हैं। ये संख्या में **चार** हैं। अ इ उ ऋ

2. **दीर्घ स्वर :** जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में लगभग **दुगुना (दो मात्रा का) समय** लगता है, इन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये संख्या में **सात** हैं।

आ ई ऊ ए ऐ ओ औ

3. **प्लुत स्वर :** जब किसी स्वर को किसी विशेष कारण से अत्यधिक लंबा खींचकर बोला जाता है, तो वहाँ वह स्वर रूप प्लुत स्वर कहलाता है। इसमें **तीन मात्रा का समय** लगता है; जैसे– ओ३म। यहाँ यदि बोला जाए कि ओम बाज़ार जाता है, तो 'ओ' ध्वनि दीर्घ स्वर ही रहेगी।

लेकिन प्राणायाम करते समय 'ओ' को देर तक बोलने से 'ओ३म' रूप ही लिखा जाएगा।

प्लुत स्वरों का उच्चारण मंत्र पढ़ते समय तथा किसी को पुकारने आदि के लिए होता है।

Scanned with CamScanner

स्वरों का प्रयोग

स्वरों का प्रयोग निम्नलिखित दो रूपों में किया जाता है–

1. **स्वतंत्र रूप से :** इनमें शब्दों के निर्माण में स्वरों का प्रयोग मूल रूप में होता है; जैसे– आए, आइए, आई, ऐनक, ईमान, उल्लू आदि।

2. **व्यंजनों के साथ मिलकर :** जब स्वरों का प्रयोग व्यंजनों के साथ मिलाकर किया जाता है तो उनके रूप में परिवर्तन आ जाता है और स्वरों के चिह्न व्यंजनों से जुड़ जाते हैं। स्वरों के ये चिह्न **मात्रा** कहलाते हैं।

मात्रा

जब स्वर व्यंजन वर्ण के साथ जुड़ते हैं, तो इनके बदले में इनकी मात्राओं को लिखा जाता है। स्वरों की मात्राएँ इस प्रकार हैं–

स्वर	मात्रा	शब्द
अ	कोई मात्रा नहीं होती	अब, कल
आ	ा	माता, तारा
इ	ि	किला, बिना
ई	ी	कील, मीठी
उ	ु	कुल, पुल
ऊ	ू	जूता, कूदना
ऋ	ृ	वृक्ष, कृपा
ए	े	केला, बेर
ऐ	ै	कैद, मैल
ओ	ो	मोर, कोयल
औ	ौ	पौधा, कौआ

'र' में 'उ' और 'ऊ' की मात्रा जोड़ना : 'र' के साथ 'उ' और ऊ की मात्राओं का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है–

र + उ = रु

र + ऊ = रू

रुक = र् + उ + क् + अ

रूप = र + ऊ + प् + अ

हिंदी वर्णमाला के सभी व्यंजनों में 'अ' स्वर मिला हुआ है। इसलिए अ की कोई मात्रा नहीं होती। अ ध्वनि हटा देने पर व्यंजन को हलंत (्) लगाकर लिखा जाता है। जैसे– क्, प्, द् आदि।

जब कोई स्वर नाक और मुँह दोनों से बोला जाता है तो उसके ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) लगाया जाता है और ऐसे स्वर नाक और मुँह दोनों से बोले जाने के कारण **'अनुनासिक'** कहलाते हैं– चाँद, आँख, माँ, साँप, पाँव, मुँह आदि।

जब चंद्रबिंदु मात्रा के साथ शिरोरेखा के ऊपर लगाना होता है तो चंद्रबिंदु के स्थान पर अनुस्वार बिंदु (ं) का प्रयोग होता है; जैसे– मैं, क्योंकि, नहीं, गेंद, सींग आदि।

Scanned with CamScanner

यदि अनुस्वार की तरह विसर्ग (:) भी स्वर के बाद आता है तो इसका उच्चारण हलके ह् की तरह होता है; जैसे– प्रायः, पुनः, अतः आदि।

आगत ध्वनियाँ

1. 'ऑ' अंग्रेज़ी से आई ध्वनि है जो 'आ' और 'ओ' के बीच की है। इसका प्रयोग केवल अंग्रेज़ी के शब्दों के लिए किया जाता है; जैसे– डॉल, कॉलेज, ऑफ़िस, कॉल आदि।

2. क़, ख़, ग़, ज़, फ़, ये ध्वनियाँ फ़ारसी की है। उर्दू-फ़ारसी से हिंदी में आए शब्दों में इनका प्रयोग किया जाता है; जैसे– क़त्ल, ख़ौफ, ग़ौर, ज़मीन, फ़ौरन आदि।

आजकल इनका प्रयोग प्रायः नहीं किया जाता। केवल उन्हीं शब्दों में इनका प्रयोग किया जाता है जहाँ इनके प्रयोग से अर्थ में अंतर आने की संभावना होती है; जैसे– सजा (सजाना), सज़ा (दंड)।

मानक वर्तनी के अनुसार हिंदी में **ज़** और **फ़** के प्रयोग को ही मान्यता मिली है।

व्यंजन वर्ण

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय श्वास-वायु मुख के किसी भाग (तालु, ओष्ठ, दंत आदि) से टकराकर, रुककर बाहर आती है, उन्हें **व्यंजन** कहते हैं।

हिंदी में व्यंजनों की संख्या **33** है। 'क' से 'ह' तक सभी ध्वनियाँ व्यंजन कहलाती हैं।

यदि व्यंजनों में 'ड़' और 'ढ़' को जोड़ दिया जाए तो इनकी संख्या 35 हो जाती है।

व्यंजनमाला

स्पर्श व्यंजन

कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ			
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ			
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़	
तवर्ग	त	थ	द	ध	न			
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म			

अंतस्थ व्यंजन	य	र	ल	व
ऊष्म व्यंजन	श	ष	स	ह
संयुक्त व्यंजन	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

व्यंजनों के प्रकार

1. स्पर्श व्यंजन : हिंदी वर्णमाला के प्रथम पच्चीस व्यंजन स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। इन्हें बोलते समय हवा मुख के विभिन्न भागों का स्पर्श करती है। अर्थात जिह्वा मुख के विभिन्न भागों को छूती है।

'क' से 'म' तक के व्यंजन स्पर्श व्यंजन हैं।

ड़ और ढ़ शब्द के प्रारंभ में कभी नहीं आते हैं।

2. अंतस्थ व्यंजन : जिन व्यंजनों को स्वर और व्यंजनों के बीच की स्थिति से बोला जाता है, उन्हें अंतस्थ व्यंजन कहते हैं। इन्हें बोलने में जिह्वा मुख के किसी विशेष भाग को स्पर्श नहीं करती। ये चार हैं– य र ल व।

3. ऊष्म व्यंजन : इनके उच्चारण में प्राणवायु निकलते समय ऊष्मा (गरमी) उत्पन्न होती है, इसलिए इन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। श ष स ह ऊष्म व्यंजन हैं।

Scanned with CamScanner

4. संयुक्त व्यंजन : एक से अधिक व्यंजनों के मेल से बनने वाले व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं। क्ष, त्र, ज्ञ और श्र संयुक्त व्यंजन हैं।

संयुक्त व्यंजन और संयुक्ताक्षर

जिन व्यंजनों को मिलाकर एक स्थायी रूप दे दिया गया है, वे (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र) तो **संयुक्त व्यंजन** हैं परंतु जब किन्हीं दो व्यंजनों को जोड़कर लिखा जाता है, तब वे **संयुक्ताक्षर** कहलाते हैं; जैसे– पक्का, ध्यान, विद्या, वक्त इत्यादि।

जब एक ही व्यंजन को मिलाकर लिखा जाता है तो उसे **द्वित्व व्यंजन** कहते हैं; जैसे–

त् + त = त्त – कुत्ता, ब् + ब = गुब्बारा

संयुक्ताक्षरों को लिखने की विधि

1. खड़ी पाई (ा) हटाकर : किसी व्यंजन के साथ लगी खड़ी रेखा (ा) को पाई कहते हैं। जिन व्यंजनों में खड़ी पाई होती है उन्हें अन्य व्यंजनों के साथ संयुक्त करते समय उनकी पाई हटा दी जाती है; जैसे– अच्छा बच्चा, सच्चा है। इस वाक्य में वर्ण 'च' की पाई हटा दी गई है।

2. हलंत (्) लगाकर : जो व्यंजन खड़ी पाई वाले नहीं हैं, उनके नीचे हलंत लगाकर दूसरे व्यंजन के साथ बोला जाता है; जैसे– शुद्ध, विद्या इत्यादि।

3. घुंडी हटाकर : क, फ व्यंजन घुंडीदार हैं। इनकी घुंडी हटाकर सामने वाले व्यंजन से जोड़ दिया जाता है; जैसे– पक्का, रफ़्तार भक्त, दफ़्तर आदि।

वर्ण-विच्छेद

स्वर और व्यंजन का अंतर समझ में आने और मात्राओं का ज्ञान होने पर किसी भी शब्द के छोटे-से-छोटे टुकड़े करना **वर्ण-विच्छेद** कहलाता है; जैसे–

बरसात = ब् + अ + र् + अ + स् + आ + त् + अ

बूँद = ब् + ऊ + अँ + द् + अ

वर्णों का उच्चारण : वर्णों का उच्चारण बड़े ध्यान से किया जाना चाहिए। जैसा लिखा है, उसे वैसा ही पढ़ा जाना चाहिए।

1. पंचमाक्षर नियम : स्पर्श व्यंजनों में प्रत्येक वर्ग के पहले चार व्यंजनों को अनुस्वार के साथ बोलने पर ध्वनि उसी वर्ग के पाँचवें अक्षर की आनी चाहिए।

कंघा	(कङ्घा)	=	ङ की ध्वनि – क ख ग घ ङ
चंचल	(चञ्चल)	=	ञ की ध्वनि – च छ ज झ ञ
अंडा	(अण्डा)	=	ण की ध्वनि – ट ठ ड ढ ण
नंद	(नन्द)	=	न की ध्वनि – त थ द ध न
पंप	(पम्प)	=	म की ध्वनि – प फ ब भ म

Scanned with CamScanner

2. ड, ड़, ढ, ढ़ के उच्चारण पर ध्यान देना ज़रूरी है; जैसे–ढक्कन, ढोल, पढ़ाई, लड़ाई, सड़क, डमरू, बाढ़ आदि।

3. र् और ऋ की मात्रा (ृ) की ठीक पहचान होनी चाहिए; जैसे–
कृष्ण को ऋ के साथ बोलें, प्रांतीय प्रभावों के कारण क्रषण या किरशन न बोलें।

4. स्वर रहित व्यंजनों को बिना स्वर के ही पढ़ा जाना चाहिए–
वक्त, भक्त, सख्त
वक्त में क् स्वर रहित है।
भक्त में क् स्वर रहित है। इसे भगत पढ़ना गलत है।
उच्चारण की अशुद्धियाँ स्थानीय प्रभावों और असावधानी के कारण पैदा होती हैं।

5. हिंदी में 'ज्ञ' का उच्चारण अकसर 'ग्य' के समान होता है। लेकिन संस्कृत में इसका उच्चारण है– ज्य।

6. **नुक्ता :** उर्दू, अरबी, फ़ारसी के शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़ा जाना चाहिए। इनमें नुक्ता लगते ही शब्द का अर्थ बदल जाता है–

राज	= राज्य	जरा	= बुढ़ापा
राज़	= रहस्य	ज़रा	= थोड़ा

'र' के विभिन्न रूप

हिंदी में 'र' का संयोग तीन विभिन्न रूपों में होता है–

1. स्वर रहित 'र' : जब 'र' आधा होता है, अर्थात जब इसके नीचे हलंत लगा होता है, तो यह वर्ण के ऊपर लगता है। आधा 'र्' जिस वर्ण के ऊपर लगता है उसका उच्चारण 'र्' के बाद किया जाता है।
'स्वर्ग' शब्द में आधा 'र्' का उच्चारण 'ग' से पहले होगा। आइए, समझें–

स्वर्ग = स् + व् + अ + र् + ग् + अ

सूर्य = स् + ऊ + र् + य् + अ

र के संयुक्त रूप : संयुक्त व्यंजनों में 'र' की स्थिति सभी व्यंजनों से भिन्न है। नीचे दिए गए उदाहरणों पर ध्यान दीजिए–

(क) राजा, सिर, रजनी।
इन शब्दों में 'र' स्वर सहित है। इसे 'र' के रूप में लिखा जाता है।

(ख) पर्वत, वर्षा, दर्शन, कर्म, धर्म।
इन शब्दों में स्वर रहित या अ रहित (र्) का प्रयोग हुआ है। जब 'र्' दो वर्णों के बीच आए तो उसे अगले व्यंजन के ऊपर लगाया जाता है और उसका उच्चारण पहले होता है। स्वर रहित 'र' (र्) को रेफ कहते हैं।

(ग) प्रसन्न, समुद्र, क्रम, प्रकृति, प्रयोग, प्रेम।
इन शब्दों में स्वर सहित र का प्रयोग हुआ है। जब कोई स्वर रहित व्यंजन स्वर सहित र के साथ जोड़ना हो, तो र को उस व्यंजन के पैरों में पदेन (्र) के रूप में लगाया जाता है।

Scanned with CamScanner

(घ) ड्रम, राष्ट्र, ट्रक, ट्रेन

इन शब्दों में स्वर सहित यानी अ सहित 'र्' का प्रयोग हुआ है। ट ठ ड और ढ जब हलंत रूप में 'र' के साथ संयुक्त होते हैं तो 'र' को पदेन के रूप (‸) में लिखा जाता है।

(ङ) परिश्रम, श्रमिक, श्रम, अश्रु।

इन शब्दों में अ सहित 'र' का प्रयोग हुआ है। श् जब अ सहित 'र' के साथ जुड़ता है तो इस रूप (श्र) में लिखा जाता है।

विशेष– यदि र की रेफ मात्रा '॔' के बाद का वर्ण भी आधा हो, तो '॔' उसके बाद वाले वर्ण पर लगेगा; जैसे– वर्त्स्य।

इसमें 'र', 'त' और 'स' तीनों आधे वर्ण हैं। आधे 'र' की ध्वनि चूँकि 'व' के तुरंत बाद निकलती है, अतः इसे 'त' के ऊपर लगना चाहिए था लेकिन इसे 'य' के ऊपर लगाया गया है। इससे स्पष्ट है कि '॔' आधे वर्ण के ऊपर नहीं लगता।

2. **स्वर सहित 'र' :** इस स्थिति में 'र' जिस व्यंजन के साथ लगता है, वहाँ 'र' का उच्चारण उस व्यंजन ध्वनि के बाद होता है; जैसे– क्रम।

क्रम = क् + र् + अ + म् + अ

3. **ट वर्ग में 'र' का प्रयोग :** जब ट वर्ग के वर्णों (ट तथा ड) में 'र' जुड़ता है, तो उसका रूप (‸) हो जाता है; जैसे–

ड्रम = ड् + र् + अ + म् + अ

ट्रेन = ट् + र् + ए + न् + अ

विशेष– द, स और ह वर्णों के साथ 'र' का प्रयोग इस प्रकार होता है–

द्रव्य = द् + र् + अ + व् + य् + अ

ह्रास = ह् + र् + आ + स् + अ

स्रोत = स् + र् + ओ + त् + अ

हमने जाना

1. भाषा की सबसे छोटी इकाई जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।
2. वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहा जाता है।
3. वर्ण के दो भेद होते हैं– स्वर और व्यंजन।
4. जिन ध्वनियों का उच्चारण बिना किसी वर्ण की सहायता के स्वतंत्र रूप से हो, स्वर कहलाते हैं। इसके तीन भेद होते हैं– ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत।
5. जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, वे व्यंजन कहलाते हैं।
6. व्यंजन के साथ स्वर का जो चिह्न लगता है, उसे मात्रा कहते हैं।
7. अं को अनुस्वार तथा अँ को अनुनासिक कहते हैं। अः को विसर्ग कहते हैं। विसर्ग का उच्चारण हलके ह् की तरह होता है।

Scanned with CamScanner

8. एक से अधिक व्यंजनों के मेल से बने व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन कहते हैं।
9. जब एक व्यंजन दो बार मिलाकर लिखा जाता है, तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं।
10. शब्द में आए वर्णों को अलग-अलग करके लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है।
11. व्यंजन के साथ स्वर का जो चिह्न लगता है, उसे मात्रा कहते हैं।

मौखिक प्रश्न

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) हिंदी वर्णमाला में कुल कितने स्वर और व्यंजन होते हैं?

(ख) संयुक्त व्यंजनों के नाम बताइए।

(ग) वर्ण के कितने भेद होते हैं?

लिखित प्रश्न

1. नीचे दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए– बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) भाषा के ध्वनि समूह को क्या कहते हैं?

वर्ण ○ स्वर ○ शब्द ○ व्यंजन ○

(ख) हिंदी में स्वरों की संख्या होती है–

ग्यारह ○ बारह ○ तेरह ○ चौदह ○

(ग) उच्चारण के आधार पर स्वर के प्रकार हैं–

दो ○ तीन ○ चार ○ पाँच ○

(घ) भाषा की सबसे छोटी इकाई को कहते हैं–

वर्ण ○ अक्षर ○ शब्द ○ वाक्य ○

(ङ) श्, ष्, स्, ह् व्यंजन किसके अंतर्गत आते हैं?

ऊष्म व्यंजन ○ अंतस्थ व्यंजन ○ स्पर्श व्यंजन ○ ये सभी ○

(च) जिसके उच्चारण में वायु नाक और मुँह दोनों से निकलती है, उसे कहते हैं–

अनुनासिक ○ अनुस्वार ○ अयोगवाह ○ विसर्ग ○

(छ) इनमें कौन-सा वर्ण शब्द के प्रारंभ में नहीं आता?

क्ष ○ ड़ ○ ऋ ○ श्र ○

2. सही वर्ण-विच्छेद के सामने (✓) का चिह्न लगाइए–

विद्यालय

(क) व + द् + इ + य + आ + ल् + अ + य् + अ ○

(ख) व + इ + द + य् + अ + ल् + अ + य् + अ ○

(ग) व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ ○

(घ) व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + ए + आ ○

Scanned with CamScanner

कविता

(क) क् + अ + व् + अ + त् + आ

(ख) क् + ए + व् + इ + त् + आ

(ग) क् + अ + व् + इ + त् + आ

(घ) क् + अ + व + इ + त् + अ

बंधन

(क) ब + अं + ध् + अ + न् + अ

(ख) ब् + अं + ध् + अ + न् + अ

(ग) ब + अं + ध + न

(घ) इनमें कोई नहीं

3. सही मिलान कीजिए–

औ		ए
उ	ह्रस्व स्वर	अ
ऋ	दीर्घ स्वर	ओ
ऊ		आ

4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए–

(क) क्ष, त्र, ज्ञ और श्र किन-किन दो-दो वर्णों के मेल से बनते हैं?

(ख) क्ष, त्र, ज्ञ और श्र से बनने वाले दो-दो शब्द लिखिए।

(ग) अनुस्वार (ं), अनुनासिक (ँ) और विसर्ग (:) के चिह्न का प्रयोग करते हुए सार्थक शब्द बनाइए। (प्रात, अतिम, खासी, ठडा, चादी)

(घ) नीचे दिए गए संयुक्त अक्षरों से दो-दो शब्द बनाइए–

ध्य _____ _____ प्य _____ _____

क्य _____ _____ ग्य _____ _____

(ङ) नीचे दिए गए द्वित्व व्यंजनों से दो-दो शब्द बनाइए–

ल्ल _____ _____ च्च _____ _____

ग्ग _____ _____ प्प _____ _____

5. नीचे दिए गए वर्णों को सही स्तंभ में लिखिए–

अ, क, श, ग, इ, य, झ, ल, ष, ण, उ, र, त, ओ, थ, व, स, द, ह

स्वर	स्पर्श व्यंजन	ऊष्म व्यंजन	अंतस्थ व्यंजन

6. वर्ण की परिभाषा लिखिए। इनकी दो मुख्य विशेषताएँ कौन-सी हैं?

_____

_____ _____

7. 'वर्णमाला' की परिभाषा लिखिए।

Scanned with CamScanner

8. **उचित विकल्प द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

(क) ह्रस्व स्वर _____ हैं। **(दो/तीन/चार)**

(ख) 'कच्चा' शब्द में _____ व्यंजन का प्रयोग हुआ है। **(द्वित्व/संयुक्त)**

(ग) 'प्राण' शब्द में 'र' _____ है। **(आधा/पूरा)**

(घ) दीर्घ स्वरों को बोलने में ह्रस्व स्वरों की तुलना में _____ समय लगता है। **(कम/अधिक)**

(ङ) वर्णमाला में ऊष्म व्यंजन अंतस्थ व्यंजनों _____ आते हैं। **(से पहले/के बाद में)**

9. **वर्ण-विच्छेद कीजिए–**

विश्वास – व् + इ + श् + व् + आ + स् + अ

कार्यक्रम – _____

दृष्टि – _____

10. **शब्दों की मात्राओं में हुई अशुद्धियों को ठीक कीजिए–**

(क) पुश्प _____

(ख) क्रष्ण _____

(ग) पणीनी _____

(घ) संभावीत _____

(ङ) मैथीलीशरण _____

(च) करतव्य _____

(छ) धारमिक _____

(ज) श्रीमति _____

(झ) बेइमान _____

(ञ) शिर्ष _____

(ट) गुरू _____

(ठ) रीक्शा _____

(ड) अवश्यक _____

(ढ) रूक _____

11. **वर्णों के साथ लगे चिह्नों के आधार पर नीचे लिखे शब्दों को उनके उचित स्तंभ में लिखिए :**

चंदर, विद्या, क्रमशः, चिह्न, सुंदर, उद्देश्य, निःसंदेह, संतान, अतः

हलंत	_____	_____	_____
अनुस्वार	_____	_____	_____
विसर्ग	_____	_____	_____

12. **शब्दों में अनुस्वार के स्थान पर पंचम वर्ण लगाकर लिखिए–**

शब्द	पंचम वर्ण	
कंगन, संगम	_____	_____
चंचल, पंखा	_____	_____
ठंडा, कंठ	_____	_____
मंद, आनंद	_____	_____
पंप, खंभा	_____	_____

Scanned with CamScanner

रचनात्मक क्रियाकलाप

1. उच्चारण अभ्यास

शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से व्यंजनों के उच्चारण स्थान की तालिका तैयार कीजिए और समूह बनाकर व्यंजनों का उच्चारण कीजिए। स्वयं एवं साथियों के उच्चारण के समय उच्चारण स्थान पर ध्यान लगाइए। इससे उच्चारण की त्रुटियाँ दूर होंगी, साथ ही व्यंजन के सही उच्चारण स्थान का बोध होगा।

2. चित्रों के नाम उचित स्थान पर लिखिए–

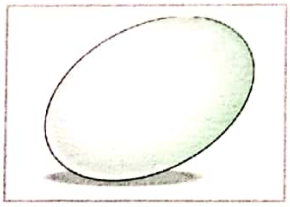

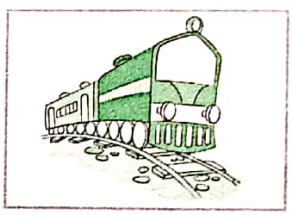

अनुस्वार	अनुनासिक	द्वित्व व्यंजन	पदेन
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____

Scanned with CamScanner

3

संधि
Joining

संधि

संधि शब्द का अर्थ है– **'मेल'**।

दो पास-पास के वर्णों के आपस में मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, वह **संधि** कहलाता है; जैसे–

सूर्य + उदय = सूर्योदय
(अ + उ के मेल से 'ओ' बना है।)

महा + आत्मा = महात्मा
(आ + आ के मेल से 'आ' बना है।)

गण + ईश = गणेश
(अ + ई के मेल से 'ए' बना है।)

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो रहा है कि वर्णों के परस्पर मिलने से नए शब्द बन गए हैं। यही संधि है।

संधि-विच्छेद

संधि को खंडित करके दोनों शब्दों को अलग-अलग करना संधि-विच्छेद कहलाता है; जैसे–

विद्यालय – विद्या + आलय

संधि के तीन भेद होते हैं–

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

स्वर संधि

दो स्वरों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे **स्वर संधि** कहते हैं; जैसे–

विद्या + आलय = विद्यालय सुर + इंद्र = सुरेंद्र

स्वर संधि के भेद

हिंदी में स्वर संधि को पाँच भागों में बाँटा गया है–

1. दीर्घ संधि
2. गुण संधि
3. वृद्धि संधि
4. यण संधि
5. अयादि संधि

1. दीर्घ संधि : जब ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ के बाद क्रमशः ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ आएँ तो दोनों के मेल से क्रमशः 'आ', 'ई' और 'ऊ' बन जाते हैं। इस मेल को 'दीर्घ संधि' कहते हैं; जैसे–

(क)	अ	+	अ	=	आ	परम	+	अर्थ	=	परमार्थ
	अ	+	आ	=	आ	गज	+	आनन	=	गजानन
	आ	+	अ	=	आ	करुणा	+	अमृत	=	करुणामृत
	आ	+	आ	=	आ	दया	+	आनंद	=	दयानंद

Scanned with CamScanner

(ख)	इ	+	इ	=	ई	अभि	+	इष्ट	=	अभीष्ट
	इ	+	ई	=	ई	परि	+	ईक्षा	=	परीक्षा
	ई	+	इ	=	ई	नारी	+	इच्छा	=	नारीच्छा
	ई	+	ई	=	ई	रजनी	+	ईश	=	रजनीश
(ग)	उ	+	उ	=	ऊ	लघु	+	उत्तर	=	लघूत्तर
	उ	+	ऊ	=	ऊ	सिंधु	+	ऊर्जा	=	सिंधूर्जा

2. गुण संधि : अ/आ के बाद इ/ई आने पर 'ए', अ/आ के बाद उ/ऊ आने पर ओ तथा अ/आ के बाद ऋ आने पर 'अर्' हो जाता है। इसे 'गुण संधि' कहते हैं; जैसे–

(क)	अ	+	इ	=	ए	देव	+	इंद्र	=	देवेंद्र
	आ	+	इ	=	ए	यथा	+	इष्ट	=	यथेष्ट
	अ	+	ई	=	ए	परम	+	ईश्वर	=	परमेश्वर
	आ	+	ई	=	ए	महा	+	ईश	=	महेश
(ख)	अ	+	उ	=	ओ	आत्म	+	उत्सर्ग	=	आत्मोत्सर्ग
	अ	+	ऊ	=	ओ	जल	+	ऊर्मि	=	जलोर्मि
	आ	+	उ	=	ओ	महा	+	उत्सव	=	महोत्सव
	आ	+	ऊ	=	ओ	गंगा	+	ऊर्मि	=	गंगोर्मि
(ग)	अ	+	ऋ	=	अर्	देव	+	ऋषि	=	देवर्षि
	आ	+	ऋ	=	अर्	महा	+	ऋषि	=	महर्षि

3. वृद्धि संधि : जब अ/आ के बाद ए/ऐ हो, तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' और यदि ओ/औ हो, तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है। इस मेल को 'वृद्धि संधि' कहते हैं; जैसे–

(क)	अ	+	ए	=	ऐ	लोक	+	एषणा	=	लोकैषणा
	अ	+	ऐ	=	ऐ	परम	+	ऐश्वर्य	=	परमैश्वर्य
	आ	+	ए	=	ऐ	सदा	+	एव	=	सदैव
	आ	+	ऐ	=	ऐ	महा	+	ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य
(ख)	अ	+	ओ	=	औ	महा	+	ओज	=	महौज
	अ	+	औ	=	औ	परम	+	औदार्य	=	परमौदार्य
	आ	+	ओ	=	औ	महा	+	औषध	=	महौषध
	आ	+	औ	=	औ	महा	+	औदार्य	=	महौदार्य

4. यण संधि : जब इ/ई, उ/ऊ या ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर हो, तो इनके मेल से इ/ई का य्, उ/ऊ का व् तथा ऋ का 'र्' हो जाता है। इस परिवर्तन को 'यण संधि' कहते हैं; जैसे–

(क)	इ	+	अ	=	य	अति	+	अधिक	=	अत्यधिक

Scanned with CamScanner

	इ	+	आ	=	या	इति	+	आदि	=	इत्यादि
	ई	+	अ	=	य	देवी	+	अर्पण	=	देव्यर्पण
	ई	+	आ	=	या	देवी	+	आलय	=	देव्यालय
	इ	+	उ	=	यु	उपरि	+	उक्त	=	उपर्युक्त
	इ	+	ऊ	=	यू	नि	+	ऊन	=	न्यून
	इ	+	ए	=	ये	प्रति	+	एक	=	प्रत्येक
(ख)	उ	+	अ	=	व	अनु	+	अय	=	अन्वय
	ऊ	+	आ	=	वा	वधू	+	आगमन	=	वध्वागमन
	उ	+	इ	=	वि	अनु	+	इति	=	अन्विति
	उ	+	ए	=	वे	अनु	+	एषण	=	अन्वेषण
(ग)	ऋ	+	आ	=	र	पितृ	+	अनुमति	=	पित्रनुमति
	ऋ	+	आ	=	रा	मातृ	+	आदेश	=	मात्रादेश
	ऋ	+	इ	=	रि	मातृ	+	इच्छा	=	मात्रिच्छा
	ऋ	+	उ	=	रु	पितृ	+	उपदेश	=	पित्रुपदेश

5. अयादि संधि : यदि ए/ऐ, ओ/औ के बाद कोई स्वर आ जाता है, तो इनके स्थान पर 'ए' का 'अय्', 'ऐ' का 'आय', 'ओ' का 'अव' तथा 'औ' का 'आव' हो जाता है। इसे 'अयादि संधि' कहते हैं; जैसे–

(क)	ए	+	अ	=	अय	चे	+	अन	=	चयन
	ऐ	+	अ	=	आय	गै	+	अक	=	गायक
	ऐ	+	इ	=	आयि	गै	+	इका	=	गायिका
	ओ	+	इ	=	अव	नौ	+	इक	=	नाविक

व्यंजन संधि

व्यंजन से व्यंजन का या व्यंजन का स्वर से मेल होने पर जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं।

व्यंजन संधि के नियम इस प्रकार हैं–

(क) यदि क, च, ट, त, प के बाद किसी वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण या य, र, ल, व या कोई स्वर आए तो क का ग, च का ज, ट का ड, त का द और प का व हो जाता है।

क् + ई = गी	वाक् + ईश = वागीश	त् + ई = दी	जगत् + ईश = जगदीश
त् + आ = दा	सत् + आचार = सदाचार	त् + ल = ल्ल	उत् + लास = उल्लास
त् + च = च्च	उत् + चारण = उच्चारण	त् + ज = ज्ज	सत् + जन = सज्जन
क् + ग = ग्ग	दिक् + गज = दिग्गज	त् + ल = ल्ल	उत् + लेख = उल्लेख

Scanned with CamScanner

विसर्ग संधि

विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे **विसर्ग संधि** कहते हैं।

निः + रस = नीरस	निः + फल = निष्फल	निः + रोग = नीरोग
मनः + रंजन = मनोरंजन	नमः + ते = नमस्ते	दु + बल = दुर्बल

व्यंजन और विसर्ग संधि के बारे में हम अगली कक्षाओं में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

हमने जाना

1. संधि शब्द दो शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ है 'मेल'।
2. दो वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन (विकार) को संधि कहते हैं।
3. संधि के तीन भेद होते हैं–
   (क) स्वर संधि (ख) व्यंजन संधि (ग) विसर्ग संधि
4. दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहा जाता है।
5. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं–
   (क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि (ग) वृद्धि संधि (घ) यण संधि (ङ) अयादि संधि
6. पहले शब्द के अंत में यदि व्यंजन हो और दूसरे शब्द के आरंभ में व्यंजन या स्वर हो, तो दोनों के मेल से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
7. विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

मौखिक प्रश्न

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) संधि के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण बताइए।
(ख) स्वर संधि किसे कहते हैं?
(ग) स्वर संधि के कितने भेद होते हैं?
(घ) दीर्घ संधि किसे कहते हैं?

लिखित प्रश्न

1. सही संधि-विच्छेद के सामने (✓) का चिह्न लगाइए–

बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) सतीश –	सत + ईश	सति + ईश	सती + इश	सती + ईश
(ख) गिरीश –	गिरी + ईश	गिरि + ईश	गिरि + इश	गिरी + इश
(ग) जगदीश –	जग + दीश	जगत् + ईश	जगत + ईश	जगत + इश
(घ) महोर्मि –	महा + उर्मि	महो + उर्मि	महा + ऊर्मि	महो + ऊर्मि

Scanned with CamScanner

बहुविकल्पीय प्रश्न

2. **सही उत्तर के सामने (✓) का चिह्न लगाइए–**

(क) राकेश	–	राका + ईश	राका + इश	राक + ईश	रा + केश
(ख) रजनीश	–	रजनी + ईश	राजन + ईश	रजनि + ईश	रज + नीश
(ग) महाशय	–	महा + अशय	मह + आशय	महा + आशय	महा + शय
(घ) नारीच्छा	–	नारी + इच्छा	नारी + छा	नारि + इच्छा	नारी + ईच्छा

3. **संधि के कितने भेद होते हैं?**

दो तीन चार पाँच

4. **स्वर संधि के कितने भेद हैं?**

दो चार पाँच तीन

5. **'सदा + एव' की संधि होगी–**

सदाएव सदएव सदैव सदेव

6. **प्रति + एक की संधि होगी–**

प्रत्येक प्रतिक प्रत्यय प्रतेक

7. **संधि कीजिए–**

नदी / देवी — आगम — ________ / ________

अभि / सु — आगत — ________ / ________

हिम / विद्या — आलय — ________ / ________

नदी / सती — ईश — ________ / ________

देव / धर्म — इंद्र — ________ / ________

8. **निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए–**

(क) महा + आत्मा = ________

(ख) निः + रोग = ________

(ग) इति + आदि = ________

(घ) पर + उपकार = ________

(ङ) रेखा + अंश = ________

(च) दिन + ईश = ________

(छ) पितृ + उपदेश = ________

(छ) गै + अक = ________

(ज) हरि + ईश = ________

(झ) उत् + चारण = ________

9. **नीचे दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए–**

(क) नमस्ते = ________ + ________

(ख) निर्धन = ________ + ________

(ग) तथैव = ________ + ________

(घ) गिरीश = ________ + ________

(ङ) वागीश = ________ + ________

(च) मनोहर = ________ + ________

Scanned with CamScanner

रचनात्मक क्रियाकलाप

1. वर्ग में लिखे शब्द पढ़िए। जिस शब्द में जो संधि हुई उसे सही शीर्षक के नीचे लिखिए–

गजानन	दिग्गज	मनोनुकूल	विद्यालय	सद्गति	तपोबल
गिरीश	उल्लेख	मनोहर	रजनीश	सज्जन	दुराशा
लघूत्तर	सदाचार	मनोरंजन			

स्वर संधि	व्यंजन संधि	विसर्ग संधि
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____

2. नीचे दिए चित्रों के नाम संधि से बनते हैं। चित्र देखिए, संकेत पर ध्यान दीजिए और चित्रों के नाम लिखिए–

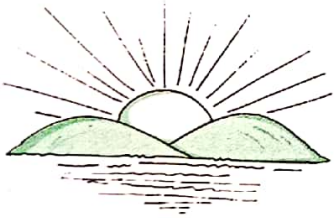

संकेत– अ + उ = ओ

_____

संकेत– आ + ऋ = अर्

_____

संकेत– ऐ + इ = आयि

_____

संकेत– अ + आ = आ

_____

Scanned with CamScanner